रात्रीक्लास 8.3.68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

जो अपने देवी–देवता धर्म के होंगे वह आ जावेंगे। ड्रामाप्लेनअनुसार यह ईश्वरीय मिशन चल रही है। जैसे उनकी मिशन है क्रिश्चियन बनाना। जो क्रिश्चियन बनते हैं उनको क्रिश्चियन डिनायस्टी से सुख मिलता है। वेतन अच्छा मिलता है। डबल मिलता है तो क्यों नहीं जावेंगे? यहां 50तो विलायत में 1500। इसलिए क्रिश्चियन बहुत बन गए हैं। भारतवासी इतना नहीं दे सकते। क्रिश्चियन बहुत हैं। लाइन बनी हुई है। बीच में कोई रिश्वत न लेवे तो उनको नौकरी से ही जवाब। तो बाबा से पूछते हैं इस हालत में क्या करें? कहेंगे तुम भी करो। फिर शुभ कार्य में लगा देना। जैसे एक मुसलमान का मिसाल देते हैं। चोरी की थी बोला हमने मस्जिद में लगाया है। अभी जो चाहो करो। फिर जज छोड़ दिया। नहीं तो जज से भी बिगर पड़े खुदा के लिए बनाया। इसके लिए सजा देते हो। यहां सब हैं बंदे। भक्ति करने वाले। उनको बंदगी से छुड़ाना है। भक्तिमार्ग में सभी पुकारते हैं। बंदे हैं सब विकारी। पुकारते हैं बाप को कि आकर हम पतितों को पावन बनाओ। भक्ति में है दुःख। इसलिए सभी पुकारते हैं आकर लिबरेट करो। घर में ले जाओ। बाप ही घर में ले जावेंगे ना। घर जाने लिए इतनी भक्ति चलती है। जब बाप आये ,आकर लिबरेट करे तब जाये। ऐसे नहीं सबमें भगवान आकर बोलते हैं। भगवान है ही एक। उनका आना ही संगम पर होता ळै। अभी तुम ऐसी बातें नहीं मानेंगे। आगे मानते थे। अभी तुम भक्ति नहीं करंते हो। कहेंगे यह तो नास्तिक बन गए हैं। बोलो हम पूजा करते थे। अभी बाप आया है हमको पूज्य देवता बनाने। सिक्खों को भी तुम समझाओ। गायन है ना मनुष्य से देवता.....देवताओं की महिमा है ना। देवताएं रहते ही हैं सतयुग में। अभी हैं कलियुग। तो बाप भी संगमयुग पर पुरुषोत्तम बनने की शिक्षा देते हैं। देवताएं हैं सबसे उत्तम। तब तो इतना पूजे जाते हैं। किसको भी भक्तिमार्ग में मालूम है नहीं। जिसकी पूजा करते हैं वह जरूर कब थे। अभी नहीं हैं। यह कहां गए? मुख्य है ल0ना0। समझते हैं यह राजधानी पास्ट हो गई है। तुम बच्चे हो गुप्त। कोई जानते थोड़े ही हैं हम विश्व के मालिक बनने वाले हैं। कहते तो हैं स्वर्ग पधारा ;परंतु वहां बनेंगे। तुम तो जानते हो हम पढ़कर यह बनते हैं। पढ़ाई पर बहुत अटेंशन देना है। बाप को याद करना है बहुत ही प्यार से। बाबा तो हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। तो क्यों नहीं याद करें। फिर दैवी गुण भी चाहिए। यह है शिवबाबा का भण्डारा। यह बाबा भी ट्रस्टी है। तो ट्रस्टी ....से पूछकर चलना चाहिए। अगर बेकायदे चलन होगी तो समझते जंगली ऐसे होते हैं। शिवबाबा की छुट्टी बिगर यज्ञ में ऐसे जंगली होते हैं। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।